विचार बिन्दु

संसार के विरुद्ध खड़े रहने के लिए शक्ति प्राप्त करने की जरूरत नहीं है। ईसा दुनिया के खिलाफ खड़े रहे, बुद्ध भी अपने जमाने के खिलाफ गए, प्रहलाद ने भी वैसा ही किया। ये सब नम्रता के धनि थे। अकेले खड़े रहने की शक्ति नम्रता के बिना असंभव है। –महात्मा गाँधी

मानसूनी बारिश ने बिगाड़ी सड़कों की सूरत : दीपावली से पूर्व मरम्मत के निर्देश

राजस्थान में इस वर्ष मानसून में हुई भारी वर्षा ने राज्य के सम्पूर्ण सड़क नेटवर्क को बुरी तरह क्षत-विक्षत करके रख दिया। बारिश का दौर थमने के बाद अब सडकों के गड्ढे जानलेवा साबित हो रहे है। सडकों का देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। सडकों का आधारभूत ढांचा हमारी अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ आधार है। प्रदेश भर से मिली जानकारी के अनुसार मानसूनी बारिश ने नगरीय और ठामीण सडकों को जगह जगह से तोड़ कर रख दिया। वाहनों के साथ पैदल चलने वालों को भी भारी परेशानी का सामना करना पड रहा है। हालांकि राज्य सरकार ने इन टूटी-फूटी सडकों की दीपावली से पूर्व मरम्मत के निर्देश जारी किये है। मंत्रियों और अफसरों ने मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप सडकों को ठीक करने के लिए अपने प्रयास तेज कर दिए है। प्रदेशभर में करीब 35 हज़ार किलोमीटर सडकें क्षितठास्त होने की जानकारी मिली है। इनमें करीब पांच हजार किलोमीटर स्टेट हाईवे को क्षति पहुंची है। प्रदेश में करीब 17 हजार किलोमीटर स्टेट हाईवे हैं। इसी तरह करीब सात हजार किलोमीटर मुख्य जिला सडकों और करीब 23 हजार किमी अन्य सडकों को भी भारी नुकसान हुआ है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक राज्य सरकार ने आंकडे जुटाकर करीब 1500 करोड रुपए खर्च कर सडकों को दिवाली से पहले ठीक करवाने की कोशिश रहेगी। कई जिलों में पांच साल की गारंटी वाली सडके, दो साल में ही टूट गई। ग्रामीणों के अनुसार बारिश ने घटिया सडकों के निर्माण और कमीशन बाजी की पोल खोलकर रख दी है। हालांकि भजन लाल सरकार ने सडकों से सम्बद्ध सभी विभागों को वर्षा से क्षतिग्रस्त सडकों को दीपावली से पूर्व ठीक करने के निर्देश दिए है। उप मुख्यमंत्री दियाकुमारी ने अधिकारीयों को लगातार फील्ड में रहकर सडक कार्यों की मॉनिटरिंग के निर्देश दिए है। राष्ट्रीय उच्च मार्गों की सडकों को छोड दें तो प्रदेश के नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में सडकें क्षत-विक्षत हैं। सम्बन्ध सरकारी एजेंसियां हर साल सडकों के निर्माण और मेंटनेंस पर करोड़ों रुपए खर्च कर रही है लेकिन सडकों पर गड्ढे होने से जहां इन पर चलना मुश्किल है वहीं यह गड्ढे जानलेवा साबित हो रहे है। फिलहाल प्रदेशभर में सडकों पर चल रहा पेचवर्क का कार्य मुख्य सडकों तक सीमित है। गली-मोहल्लों की सडकों की अभी सुध-बुध नहीं ली गई है। राजधानी जयपुर में भारी वर्षा ने सडकों को बुरी तरह क्षतिग्रस्त करके रख दिया है।

जयपुर प्रदेश की राजधानी है। यहाँ हजारों वाहन सड़कों पर प्रतिदिन विचरण करते हैं। इन सड़क मार्गों पर राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री और अन्य वी.आई.पी. लगभग रोज ही आते-जाते हैं। यहाँ छोटी-मोटी मिलाकर हजारों सड़कें हैं जो समुचित देख-रेख के अभाव में घायल अवस्था में पड़ी हैं। जे.डी.ए. और नगर निगम के सड़क मरम्मत के वाहन कहीं-कहीं देखने को मिल जायेंगे मगर गुणवत्ता के अभाव में इनके लगाये पैबंदों की स्थिति कुछ ही दिनों में पुरानी स्थिति में लौट आती है। राजधानी की सड़कों की यह स्थिति है तो प्रदेश की जिला, नगर और ग्रामीण सड़कों का सहज ही अन्दाज लगाया जा सकता है।

बडे-बडे खड्डे और गड्ढों ने आमजन और वाहनों के लिए खतरे का एलान कर दिया है। कई जगह सडकें बह जाने की जानकारी मिली है। सडक दुर्घटनाएं बढने लगी है। हेलमेट नहीं लगाने, नो पार्किंग में गाडी खडी करने, रोड टैक्स नहीं भरने पर आम लोगों के खिलाफ फौरी कार्यवाही हो जाती है जबकि सडक के गढ्ढों के कारण सभी वाहनों में मेंटेनेंस बढ जाता है, टूटी सडकों के कारण लोग हादसों का शिकार हो रहे है लेकिन इसकी परवाह किसी को नहीं है। यह हाल तब है कि जब राजधानी में हर वीवीआईपी मूवमेंट के समय सडकों की मरम्मत के नाम पर कुछ चुनिदां सडकों का ही बार-बार मेटनेंस किया जाता है, बाकी राजधानी की सडकें बदहाल हालत में है। राजधानी की यह स्थिति है तो जिला, नगरीय और ग्रामीण सडकों का सहज ही अन्दाजा लगाया जा सकता है। वर्षात की बात एक बारगी छोड भी दें तो भी आये दिन किसी न किसी विभाग की खुदाई ने सडकों को तहस नहस कर रखा है। नगरों और महानगरों की सडकों पर अतिक्रमण किसी से छिपा नहीं है। यूनेस्को द्वारा घोषित राजधानी जयपुर की वर्ल्ड हेरिटेज सीटी का हाल भी सही नहीं कहा जा सकता जहाँ बाजारों में सरेआम सडक मार्गों पर हुए अतिक्रमणों ने लोगों का जीना हराम कर रखा है।

सडकें हमारे परिवहन का मुख्य साधन हैं। जहाँ हर रोज हमारे लाखों व्यवसायिक और निजी वाहन सरपट सडकों पर दौडते हैं। सडक परिवहन ने सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। कम एवं मध्यम दूरियाँ के लिए यह यातायात का सर्वाधिक सुगम एवं सस्ता साधन भी हैं। वास्तव में यह सेवा परिवहन के अन्य साधनों की सहायक है, क्योकि इसकी विश्वसनीयता, शीघ्रता, लचीलापन एवं दरवाजे तक प्रदान की जाने वाली सुविधा काफी महत्तवपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान राज्य सरकार ने शासन व्यवस्था सम्भालते ही यह घोषणा की थी कि सडकों की प्राथमिकता से सार-संभाल की जायेगी और जन भावनाओं के अनुरूप निर्माण और जीर्णोद्धार का कार्य हाथ में लेकर सर्वसाधारण को राहत दी जायेगी। मगर आज भी आप भी राज्य के किसी भी शहरी-ग्रामीण मार्ग पर चले जाइये आपको सडकों की वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा। जयपुर प्रदेश की राजधानी है। यहाँ हजारों वाहन सडकों पर प्रतिदिन विचरण करते हैं। इन सडक मार्गों पर राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री और अन्य वी.आई.पी. लगभग रोज ही आते-जाते हैं। यहाँ छोटी-मोटी मिलाकर हजारों सडकें हैं जो समुचित देख-रेख के अभाव में घायल अवस्था में पडी हैं। जे.डी.ए. और नगर निगम के सडक मरम्मत के वाहन कहीं-कहीं देखने को मिल जायेंगे मगर गुणवत्ता के अभाव में इनके लगाये पैबंदों की स्थिति कुछ ही दिनों में पुरानी स्थिति में लौट आती है। राजधानी की सडकों की यह स्थिति है तो प्रदेश की जिला, नगर और ग्रामीण सडकों का सहज ही अन्दाज लगाया जा सकता है।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 18 सितम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, पुष्य नक्षत्र प्रात: 6:33 तक, शिव योग रात्रि 9:37 तक, कौलव करण दिन 11:32 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-तुला, बुध-कन्या, गुरू-मिथुन, शुक्र-सिंह, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि अमृत सिद्धि और गुरू पुष्य योग सूर्योदय से प्रात: 6:33 तक है। आज द्वादशी का श्राद्ध है और सन्यासियों का श्राद्ध है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:48 तक, चर 10:50 से 12:21 तक, लाभ-अमृत 12:21 से 3:23 तक, शुभ 4:54 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:17, सूर्यास्त 6:25

मेष
परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ बनी रहेगी। मन में असंतोष और भय बना रहेगा।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। मन में भय बना रहेगा। यात्रा में दुर्घटना का भय है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कुंभ
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन: स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

भारत की गौरवशाली यात्रा का स्वर्णिम युग

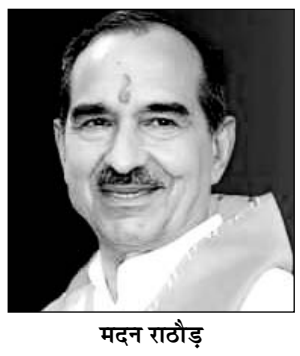

मदन राठौड़

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के 75वें जन्मदिवस पर सम्पूर्ण राजस्थान की जनता और भारतीय जनता पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। उनका जीवन संघर्ष, अनुशासन, संवेदनशीलता और अविरल राष्ट्रसेवा का एक अद्वितीय उदाहरण है। एक साधारण स्वयंसेवक से भारत के प्रधानमंत्री की ऐतिहासिक यात्रा में मोदीजी ने अपनी अदम्य इच्छाशक्ति, संकल्पशक्ति और राष्ट्र प्रथम भावना के द्वारा पूरी दुनिया को भारत की शक्ति का अहसास कराया है। उनका दृढ़ संकल्प भारत माता का शीश कभी झुकने नहीं दूंगा हर भारतीय के मन में विश्वास की अलख जगाता है।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने अपने दीर्घ व प्रेरणादायी सार्वजनिक जीवन में भारतीय समाज को एक नई दिशा देने का कार्य किया। 140 करोड़ भारतीयों की सेवा, देश को एक सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने का उनका सपना और प्रयास सराहनीय है। उनके नेतृत्व में भारत ने न केवल राजनीतिक दिशा-निर्देशों को नये आयाम दिए, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और अंतरराष्ट्रीय पहचान को भी एक नई ऊँचाई पर पहुँचाया। उनकी सोच, दूरदृष्टि और निर्णय क्षमता के परिणामस्वरूप आज भारत हर क्षेत्र में एक मजबूत, विकसित और आत्मविश्वासी राष्ट्र के रूप में उभर कर सामने आया है।

मोदी जी के नेतृत्व में हुए आर्थिक सुधार ऐतिहासिक रहे हैं। जैसे- जीएसटी क्रियान्वयन, नोटबंदी का साहसिक निर्णय, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया, मुद्रा योजना और प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी अनेक पहलों ने देश की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को मजबूत किया है। जन-जन तक बैंकिंग सेवाएं पहुंचाने के लिए जनधन योजना के ज़रिए करोड़ों लोगों को देश की आर्थिक मुख्यधारा में जोड़ा गया। हर भारतीय को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए की गई नीति-निर्माण की ये दूरगामी सोच उन्हें एक सच्चे जननेता के रूप में स्थापित करती है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी प्रधानमंत्री मोदी जी की छवि एक साहसी और प्रभावशाली नेता के रूप में स्थापित हुई है। पाकिस्तान जैस दुश्मन देशों के प्रति उनकी प्रबल नीति से लेकर, आतंकवाद एवं नक्सलवाद के खिलाफ उनके निर्णायक कदमों ने भारत की सुरक्षा को और सुदृढ़ किया। वैश्विक नेतृत्व में उन्होंने भारत की साख बढ़ाई और तमाम अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की आवाज बुलन्द की। रक्षा, अंतरिक्ष और तकनीक के क्षेत्रों में उनकी योजनाओं ने देश को नई ऊँचाइयों तक पहुंचाया है।

सामाजिक और सांस्कृतिक मोर्चे पर भी मोदी जी ने प्रेरक कार्य किए हैं। महिला सशक्तिकरण की दिशा में महिला आरक्षण जैसे ऐतिहासिक कदम, स्वच्छ भारत अभियान, उज्ज्वला योजना और जल जीवन मिशन ने समाज के हर वर्ग के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया है। भारतीय संस्कृति, कला और आध्यात्म का पुनरुत्थान करते हुए प्रधानमंत्री मोदी जी ने देश को गौरवशाली परंपराओं से जोड़ने का कार्य किया है।

आज, जब हमारे प्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी 75वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, हमें विश्वास है कि उनकी अडिग नेतृत्व क्षमता, गहन राष्ट्रभक्ति और लोककल्याण के प्रण से भारत आने वाले दशकों में विश्व के सर्वोच्च राष्ट्रों की कतार में खड़ा होगा। सम्पूर्ण भाजपा परिवार एवं राजस्थान की तरफ से उनके अच्छे स्वास्थ्य और लंबी उम्र की मंगलकामना करता हूँ। मोदी जी का योगदान, सोच और मार्गदर्शन हमेशा देश के लिए प्रेरणा की अलौकिक मिसाल बना रहेगा।

–मदन राठौड़,
भाजपा प्रदेश अध्यक्ष

कब होगा सम्पूर्ण साक्षर राजस्थान?

राजेन्द्र जोशी

साक्षरता से व्यक्ति के भीतर जीवन मूल्यों की स्थापना और उन्हें सजग और जागरूक नागरिक भी बनाती है। इस बड़े फलक को दो दशक पहले केरल ने हासिल कर लिया और अब तो केरल डिजिटल साक्षर भी बन गया। नवीन और चुनौति भरे दौर में हिमाचल प्रदेश ने इस दिशा में बड़ी उपलब्धि हासिल की है। पिछले दिनों पहाड़ से एक सुकून भरा समाचार मिला । पहाड़ों की रानी शिमला और पहाड़ों के बीच बसा हुआ हिमाचल प्रदेश विपरीत परिस्थितियों के बावजूद संपूर्ण साक्षर हो गया। हिमाचल प्रदेश की परिस्थितियां हम सभी जानते हैं कि एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचने में कितनी मुश्किल होती हैं।

सफर सुहाना है, परन्तु दुरूह है। पहाड़ों में एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए अधिकतर पैदल ही चलना पड़ता है। हिमाचल प्रदेश की सात प्रतिशत से सम्पूर्ण साक्षरता तक की यात्रा का सफर बहुत चुनौतिपूर्ण रहा है। यह कार्य स्कूल शिक्षा निदेशालय के तत्वावधान में पूर्ण किया गया । मुश्किल सफर का सुखद पहलू 2025 में शत-प्रतिशत साक्षरता से रहा। इन दिनों साक्षरता के अच्छे समाचार मिल रहे हैं। केरल के बाद मिजोरम, त्रिपुरा फिर गोवा और अब हिमाचल प्रदेश सम्पूर्ण साक्षर हो गए। दो दशक पहले वर्ष 1991 में मुझे केरल के साक्षरता अभियान के नजदीक से देखने का अवसर मिला। वहां के सरकारी और गैर सरकारी लोगो का समर्पण गजब था।

लगभग दो दशक से भी पहले देश ने संपूर्ण साक्षरता की परिकल्पना की थी। वह समय देशभर में चुनौती भरा था। जब भारत की साक्षरता दर दुनिया के अन्य देशों के मुकाबले बहुत कम थी। देश में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना की गई। धीरे-धीरे लगभग सभी राज्यों में सम्पूर्ण साक्षरता के लिए जोरदार काम प्रारंभ हुआ। इसके लिए राज्यों ने साक्षरता के लिए कार्य योजना का निर्माण किया और प्रदेशों में बेहतरीन कार्य हुआ। पिछले एक दशक से भारत सरकार ने साक्षरता की ज़िम्मेदारी पूरी तरह राज्यों के हवाले कर दी। ऐसे में अनेक राज्य सरकारों ने स्वप्रेरणा से साक्षर होने के लिए बेहतरीन काम किया। और राज्य सम्पूर्ण साक्षर हो रहे है।

अधिकांश राज्यों में यह कार्य स्कूल शिक्षा निदेशालय अथवा ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग के माध्यम से किया जा रहा है। राजस्थान उन सौभाग्यशाली राज्यों में जहां साक्षरता के लिए स्वतंत्र विभाग स्थापित किया गया। राजस्थान में प्रौढ शिक्षा निदेशालय जनवरी 1979 में स्थापित हुआ। और इसी प्रकार प्रत्येक जिले में विभाग खोले गये। स्वतंत्र विभाग होने के बावजूद राजस्थान की साक्षरता दर चिंताजनक है। राजस्थान उन राज्यों में शुमार है जहां साक्षरता के क्षेत्र में प्रदेश की गिनती नीचे से की जाती है। हमे उन प्रदेशों से सीखना चाहिए जहां विपरीत परिस्थितियों के बावजूद साक्षर होने की होड मची है। स्वतंत्र विभाग होने के बावजूद साक्षरता उस विभाग की भी प्राथमिकता में नहीं है । जब से साक्षरता भारत सरकार के अभियान से कार्यक्रम बना है तब से राजस्थान का साक्षरता एवं सतत शिक्षा निदेशालय हाथ पर हाथ धरे बैठा है। राज्य की स्वतंत्र कार्य योजना बनाने में असफल रहा है। यह कमजोरी सरकारों की नहीं है बल्कि निदेशालय जैसी मूल संस्था की असफलता मानी जानी चाहिए।

स्वतंत्र विभाग जिसके पास निरक्षरता उन्मूलन के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य नहीं है। स्वतंत्र विभाग की सफलता तब मानी जाती जब राजस्थान सम्पूर्ण साक्षर प्रदेश बनता।

जबकि देश के अन्य प्रदेशों में स्वतंत्र विभाग स्थापित नहीं हैं। वहां यह कार्य अन्य विभागों के जिमे दिया गया है। राजस्थान में संसाधनों की उपलब्धता और प्रशिक्षित मानव तंत्र होने के बावजूद निदेशालय द्वारा किसी भी प्रकार की प्रभावी कार्य योजना नहीं है। पिछले दो दशक से राज्य के साक्षरता एवं सतत शिक्षा निदेशालय को सरकारों ने भी जानने का प्रयास नहीं किया आप क्या काम कर रहे हो।

जहां हिमाचल प्रदेश 7 प्रतिशत से शत-प्रतिशत तक पहुँच गया, वही राजस्थान 8.95 प्रतिशत से 2011 की जनगणना में 66.11 प्रतिशत तक आकर अटक गया। राजस्थान की साक्षरता वृद्धि दर तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो 2001 से 2011 के दशक में मात्र 5.71 प्रतिशत की वृद्धि कर सका। जिस समय राजस्थान में संपूर्ण साक्षरता अभियान भारत सरकार के सौजन्य से प्रारंभ हुआ था। देश भर में यह अभियान स्वतंत्रता आंदोलन के बाद पहली बार सभी जिलों में आयोजित किया गया। 1991-2001 के दशक में राजस्थान की वृद्धि दर 21.85 प्रतिशत रही थी। राजस्थान के साक्षरता निदेशालय ने उस वृद्धि दर को बरकरार रखना तो दूर आधे तक भी नहीं पहुँच सका। राजस्थान में 2001 के बाद के दशक में लगभग साक्षरता को कार्यक्रम बनाकर रख दिया। जो रेंगता चल रहा है। राजस्थान के लिए उजला पक्ष यह है की 1991 से 2001 के दशक में राजस्थान ने साक्षरता दर में क्वांटम जंप लिया, वही अनेक जिलों को सत्यैन मैत्रेय पुरस्कारों से भी नवाजा जा चुका हैं । साक्षरता के प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय यूनेस्को कन्फ्यूशियस पुरस्कार 2006 से राजस्थान को सम्मानित किया गया था।

अगर तुलनात्मकता की बात करेंगे तो पुरुष साक्षरता दर में इस दशक में मात्र 3.50 प्रतिशत और महिला साक्षरता दर में है 8.27 प्रतिशत की वृद्धि अंकित की गई थी। कोटा जिले को छोड़कर शेष राज्य में वर्ष 2010 में केवल ग्रामीण क्षेत्र में किए गए सर्वेक्षण के दौरान साक्षर भारत पोर्टल पर 12520777 असाक्षर चिन्हित किए गए थे। इन असाक्षरों को अभियान के रूप में योजनाबद्ध तरीके से संकल्पित होकर साक्षर किया जाना था।

पीएलएफएस की रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान की साक्षरता दर 2025 में 75.8 प्रतिशत के साथ नीचे से चौथे नंबर पर आता है। एक सुकून देने वाली बात राजस्थान के लिए जरूर है कि पहले हम नीचे से दूसरे नंबर पर थे और अब 2025 के सैंपल सर्वे में हम चौथे स्थान पर आ चुके हैं।

–राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद-साहित्यकार

"नेशनल ट्राईबल फूड फेस्टिवल- 2025" का उदयपुर में भव्य आगाज़

उदयपुर, (निसं)। झीलों की नगरी उदयपुर इन दिनों देशभर के परंपगरात जनजाति व्यंजनों की खुशबू से सुवासित हो रही है। नगर निगम परिसर में कहीं चूल्हे पर मिट्टी के बर्तनों में दाल-सब्जी पक रही हैं, तो कहीं ढाक के पतों के बीच मक्की के पानिये पक रहे हैं। रागी, कोदरा, वटी जैसे मोटे अनाजों के व्यंजनों और महुआ के फुलों के ढोकले और लड्डू का चटकारा मिल रहा है तो बांस की सब्जी चखने के लिए होड़ सी मच रही है। यह सभी दृश्य नगर निगम परिसर में बुधवार से शुरू हुए तीन दिवसीय नेशनल ट्राईबल फूड फेस्टिवल - 2025 में देखने को मिल रहे हैं।

केबिनेट मंत्री बाबूलाल खराड़ी सहित अन्य अतिथियों ने व्यंजनों की जानकारी ली।

■ **परंपरागत जनजाति व्यंजनों की खुशबू से सुवासित हो उठी झीलों की नगरी**

जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से भगवान बिरसा मुण्डा की 150वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में मनाए जा रहे जनजातीय गौरव वर्ष के तहत देश भर में विविध आयोजन हो रहे हैं। इसी क्रम में उदयपुर में जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग एवं माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान के तत्वावधान में तीन दिवसीय नेशनल ट्राईबल फूड फेस्टिवल का शुभारंभ बुधवार को नगर निगम परिसर में जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी के मुख्य आतिथ्य में हुआ। विशिष्ट अतिथि उदयपुर शहर विधायक ताराचंद जैन एवं उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा रहे। फेस्टिवल में राजस्थान सहित देश के 7 राज्यों से जनजाति समाज के पाक कलाकार भाग लेकर अपने-अपने क्षेत्र के विशिष्ट परंपरागत जनजाति व्यंजन तैयार कर प्रदर्शित कर रहे हैं। फेस्टिवल में प्रवेश पूरी तरह से नि:शुल्क है। आमजन स्टाल्स पर अपनी पसंद से खाद्य सामग्री खरीद कर उसका लुत्फ उठा सकते हैं। आयोजन स्थल पर व्यंजनों का आनंद लेने के लिए डाइनिंग एरिया की भी व्यवस्था रखी गई है।

समारोह को संबोधित करते मुख्य अतिथि केबिनेट मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने कहा कि यह फेस्टिवल व्यंजनों के स्वाद के साथ सांस्कृतिक संगम का भी सुअवसर है। इसके माध्यम से लोग एक दूसरे की संस्कृति को जान सकेंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक भारत-श्रेष्ठ भारत के लक्ष्य को लेकर चल रहे हैं। इसी क्रम में यह आयोजन हो रहे हैं।

केबिनेट मंत्री ने पारंपरिक खान-पान का जिक्र करते हुए कहा कि हमारे पूर्वजों का भोजन और दिनचर्या स्वास्थ्यवर्धक थी, इसलिए लोग बीमार कम होते थे, लेकिन अब खान-पान में आए बदलाव और विकृतियों के चलते स्वास्थ्य संबंधी शिकायतें ज्यादा होने लगी हैं। उन्होंने परंपरागत खाद्य प्रणाली को अपनाने का भी आह्वान किया। उन्होंने कहा कि नेशनल ट्राईबल फूल फेस्टिवल भारत की सांस्कृतिक विविधता को उजागर करते हुए इन विविधताओं को एक सूत्र में पिरोने का मंच भी सिद्ध होगा। उद्घाटन समारोह को विधायक तारांचद जैन ने भी संबोधित किया।

प्रारंभ में टीआरआई निदेशक ओपी जैन ने आयोजन की जानकारी दी। कार्यक्रम में जनजाति बालिकाओं ने नृत्य, गीत आदि की प्रस्तुतियां भी दी। समारोह में टीएडी उपायुक्त कृष्णपालसिंह चौहान, जितेंद्र पाण्डे, निदेशक सांख्यिकी सुधीर दवे सहित अधिकारी एवं विभिन्न क्षेत्रों से आए पाक कलाकार उपस्थित रहे। संचालन अतिरिक्त जिला शिक्षाधिकारी टीएडी डॉ. अमृता दाधीच ने किया। केबिनेट मंत्री खराड़ी सहित अतिथियों ने विभिन्न स्टाल्स का अवलोकन कर प्रदर्शित व्यंजनों के बारे में जानकारी ली। साथ ही जनजाति पाक कलाकारों का उत्साहवर्धन किया।

फूड फेस्टिवल में महाराष्ट्र के महादेव कोली जनजाति के मासवडी, डांगर भाकरी, कड़क माकरी, मध्यप्रदेश से बारेला, बेगा, मलासी जनजाति द्वारा लाल ज्वारी के लड्डू, जंगली मौसंबी भाजी, कुटकी भात, जम्मू कश्मीर से गुज्जर जनजाति द्वारा कद्दू खीर, कुंगी मुकुम, दादर एवं नगर हवेली से माण्डोनी जनजाति द्वारा बेम्बू अचार, नागली रोटी, मोरींगा भाजी, छत्तीसगढ़ से हालना एवं मुरीया जनजाति द्वारा मंडिया रोटी, आमल, चापड़ा चटनी, गुजरात से घोड़िया जनजाति द्वारा नागली से तैयार विभिन्न व्यंजन तथा राजस्थान के विभिन्न जनजाति बहुल जिलों से भील, मीणा, गरासिया एवं सहरिया जनजाति के पाक कलाकारों द्वाना कुलध की घूघरी, मक्के का खींचड़ा, मक्की राब व लापसी, कुआर, किकोड़े की भाजी, बाजरा राब, बाजरी का सोगरा, महुआ के ढेकले, महुआ के लड्डू, पानिया, केर सांगरी (पंचकुटा) इत्यादि व्यंजन तैयार किए जा रहे हैं।

अवैध खनन पर कार्रवाई, 582 टन फैल्सपार जब्त

ब्यावर, (निसं)। जिला कलेक्टर कमल राम मीना के निर्देशों की पालना में खनिज विभाग एवं राजस्व विभाग की संयुक्त टीम ने ग्राम कुण्डिया, तहसील मसूदा में अवैध खनन स्थल पर अकस्मात छापामारी की। कार्रवाई के दौरान एक स्थान पर फैल्सपार खनिज का अवैध खनन होते पाया गया।

मौके पर हल्का पटवारी ने बताया कि यह अवैध खनन खसरा संख्या 16 की खातेदारी भूमि से सटी चारागाह भूमि खसरा संख्या 3006/15 में हो रहा था। जांच में खुलासा हुआ कि यह अवैध खनन महेन्द्र सिंह पुत्र लक्ष्मण सिंह निवासी चांदा का बाड़िया, तहसील मसूदा, जिला ब्यावर एवं खसरा संख्या 16 के खातेदारों द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। टीम ने मौके पर अवैध खनन पिट का नाप-जौक किया, जिसमें पाया गया कि लगभग 20 मीटर लम्बाई, 7 मीटर चौड़ाई एवं 2 मीटर गहराई में खुदाई की गई है। इस आधार पर लगभग 582.4 टन फैल्सपार खनिज का अवैध निर्गमन होना सामने आया। प्रारंभिक जांच में यह स्पष्ट हुआ कि खातेदारों एवं खननकर्ता द्वारा आपसी सहमति से यह अवैध खनन किया जा रहा है। इस पर 7.18 लाख रुपये की पेनल्टी आरोपित की गई है तथा संबंधित खननकर्ता एवं खातेदारों के विरुद्ध पुलिस थाना सदर में एफ.आई.आर. दर्ज कराने की कार्रवाई की जा रही है। खातेदारी अधिकार निरस्तीकरण की कार्रवाई भी प्रस्तावित है।

■ **खनिज एवं राजस्व विभाग की संयुक्त टीमों ने 7.18 लाख की पेनल्टी लगाई**

जिला कलेक्टर कमलराम मीना ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि जिले में अवैध खनन किसी भी परिस्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई करते हुए दोषियों पर कड़ी प्रशासनिक और कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

कार्रवाई के दौरान वन विभाग की टीम तैनात रही।